

भारत का जल संकट और महिलाएँ

प्रलिस के लयि

केंद्रीय भूजल बोरड

मेन्स के लयि

जल संसाधन और संबधति मुददे

चरचा में क्यों?

बदलते मौसम परस्थितियों और बार-बार **सूखे** की वजह से भारत जल संकट से जूझ रहा है और इस संकट की सबसे ज़्यादा शकार महिलाएँ होती हैं।

- भारत में पानी की कमी की स्थिति और खराब होने की आशंका है क्योंकि वर्ष 2050 तक कुल जनसंख्या के 1.6 बलियिन तक बढ़ने की उम्मीद है।

प्रमुख बदि:

जल संकट:

- हालाँकि भारत में **दुनिया की आबादी का 16%** हसिसा है, लेकिन भारत के पास दुनिया के फरेशवाटर संसाधनों का **केवल 4%** हसिसा ही है।
- हाल के दनिों में भारत में जल संकट की समस्य़ा बहुत गंभीर है, जसिने पूरे भारत में लाखों लोगों को प्रभावति कथिा है।
- हाल के **केंद्रीय भूजल बोरड** के आँकड़ों (2017 से) के अनुसार, भारत के 700 में से 256 ज़िलों में भूजल स्तर के 'गंभीर' या 'अत्यधिक दोहन' की सूचना है।
- भारत के तीन-चौथाई ग्रामीण परविरों की पाइप के पीने योग्य पानी तक पहुँच नहीं है और उन्हें असुरकषति स्रोतों पर नरिभर रहना पड़ता है।
- भारत दुनिया का सबसे बड़ा भूजल दोहन करने वाला देश बन गया है, जो कुल जल का 25% हसिसा है। हमारे लगभग **70% जल स्रोत दूषति** हैं और हमारी प्रमुख नदियाँ प्रदूषण के कारण सूख रही हैं।

जल संकट का कारण:

- **जनसंख्या वृद्धि:**
 - जनसंख्या वृद्धि के परणामस्वरूप प्रतवि्यक्तपिानी की अपर्याप्तता।
 - भारत में उपयोग करने योग्य पानी की कुल मात्रा 700 से 1,200 बलियिन क्यूबकि मीटर (बीसीएम) के बीच होने का अनुमान लगाया गया है।
 - एक देश को जल-तनावग्रस्त माना जाता है यद उसके पास प्रतवि्यक्तप्रतविर्ष जल की मात्रा 1,700 क्यूबकि मीटर से कम है।
- **खराब पानी की गुणवत्ता:**
 - भारत में अधिकांश नदियों का पानी पीने के लायक नहीं है और कई हसिसों में तो नहाने लायक भी नहीं है।
 - पानी की खराब गुणवत्ता शहरी जल उपचार सुवधियों में अपर्याप्त और वलिंबति नविश का परणाम है।
 - इसके अलावा औद्योगिक अपशषिट मानकों को लागू नहीं कथिा जाता है क्योंकि राज्य प्रदूषण नयित्रण बोरडों के पास अपर्याप्त तकनीक और मानव संसाधन हैं।
- **घटती भूजल आपूर्ति:**
 - कसिनो द्वारा अधिक दोहन के कारण भूजल आपूर्ति घट रही है।
 - कुछ कषेत्रों में कम बारशि के कारण भी भूजल कम हो रहा है।
- **टकिारू खपत:**
 - कुएँ, तालाब और टैक सूखने की स्थिति में हैं क्योंकि भूजल संसाधनों पर अतनरिभरता और नरितर खपत के कारण उन पर दबाव बढ़ रहा है।
 - पानी का असमान वतिरण, प्रदूषण के कारण स्थानीय जल नकियों का दूषति होना / कमी और उचति जल उपचार सुवधि न होना आदि

स्थितियों भारत में जल संकट को बढ़ा रही है।

महिलाओं पर प्रभाव:

- **महिलाओं की संवेदनशीलता:**
 - जल संकट महिलाओं को उच्च जोखिम के कारण संवेदनशील बनाता है। भारत में पानी लाना सदियों से महिलाओं का काम माना जाता रहा है।
 - विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ निकटतम स्रोत से पानी लेने के लिये मीलों पैदल चलकर आती हैं।
- **स्वच्छता तक कम पहुँच:**
 - महिलाओं का हाशिये पर होना तथा उनके लिये वशिष्ट शौचालय की कमी के कारण स्थिति और भी गंभीर हो जाती है।
 - इस संपूर्ण व्यवस्था के कारण उन्हें जल वाहक बनने के लिये मज़बूर किया जा रहा है, जिसके कारण उनके पास अपने लिये बहुत कम समय होता है। यह महिलाओं के लिये स्वच्छता, बेहतर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तक पहुँच को और कम करता है।
- **वाटर-वाइफ**
 - महिलाओं द्वारा समग्र जल प्रबंधन के चलते महाराष्ट्र के एक सूखाग्रस्त गाँव में ववाह की एक नई व्यवस्था ने जन्म लिया है। इसमें पानी इकट्ठा करने के लिये एक से अधिक जीवनसाथी का होना शामिल है। व्यवस्था को 'वाटर-वाइफ' कहा जाता है।
 - यह नसिंसदेह प्रतगामी सोच का एक उदाहरण है, जहाँ महिलाओं को पानी के पाइप या टैंकों के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

संबंधित सरकारी पहलें:

- [जल क्रांति अभियान](#)।
- [राष्ट्रीय जल मशिन](#)।
- [राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम](#)।
- [नीति आयोग का समग्र जल प्रबंधन सूचकांक](#)।
- [जल जीवन मशिन](#)।
- [जल शक्ति अभियान](#)।
- [अटल भू-जल योजना](#)।

आगे की राह

- लैंगिक समानता प्राप्त करने और दुनिया की आधी आबादी की क्षमता को अनलॉक करने में पानी, स्वच्छता और स्वच्छता आवश्यकताओं को संबोधित किया जाना एक महत्वपूर्ण चालक है। जल संकट महिलाओं का मुद्दा है और नारीवादियों को इस विषय पर बात करने की ज़रूरत है।
- नदी के पानी को दूषित होने से बचाने के लिये बाढ़ के जल स्तर को नदी के जल स्तर से काफी ऊपर रखने की आवश्यकता है।
- जैविक खाद्य वनों या फलों के ऐसे वृक्षों को लगाकर बाढ़ के मैदानों को सुरक्षित किया जा सकता है जो अधिक पानी की मांग या उपभोग नहीं करते हैं।
- जल प्रबंधन में नगमों को अपने [कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व \(सीएसआर\)](#) पर्यासों का उपयोग करने के लिये नवाचार और जल संरक्षण तथा जल पुनर्भरण की दिशा में अधिक सक्रिय भूमिका नभानी चाहिये।

स्रोत: डाउन टू अर्थ